
THANK YOU,
WORLD

भाग दो

दहलीज़ 11

धन्यवाद, दुनिया

मैं इन दहलीज़ों के अंत तक उसी तरह पहुँचा हूँ जैसे मैं अपने जीवन में कई जगहों तक पहुँचा हूँ।

किसी परिपूर्ण नक़्शे का अनुसरण करते हुए नहीं।

एक धागे का अनुसरण करते हुए।

कभी दृश्य।

कभी अदृश्य।

कभी इतना मज़बूत कि मुझे राह दिखा सके।

कभी किसी याद जितना महीन।

जब मैंने यह रास्ता शुरू किया था, मैं कोई गाथा नहीं बना रहा था।

मैं कोई तंत्र नहीं रच रहा था।

मैं कोई निशान छोड़ने की कोशिश नहीं कर रहा था।

मैं बस समझने की कोशिश कर रहा था।

यह समझने की कि कुछ लोग हमारे भीतर क्यों जीते रहते हैं।

यह समझने की कि कुछ अनुभव हमें क्यों नहीं छोड़ते।

यह समझने की कि कुछ घाव सीख क्यों बन जाते हैं।

यह समझने की कि समय कई चीज़ें ले जाता है, पर सब कुछ क्यों नहीं।

हर दहलीज़ जिसे तुमने पार किया है, इस खोज का एक हिस्सा कहती है।

कोई सिद्धांत नहीं।

कोई दर्शन नहीं।

एक खोज।

क्योंकि जीवन ने मुझे कभी अंतिम सत्य नहीं सौंपे।

उसने मुझे मुलाक़ातें सौंपीं।

लोग।

ज़िम्मेदारियाँ।

हानियाँ।

यात्राएँ।

बीमारियाँ।

पुनर्जन्म।

और उनमें से हर एक से मैंने एक अर्थ निकालने की कोशिश की है।

मैं हमेशा सफल नहीं हुआ।

पर मैं कोशिश करता रहा।

सालों बीतने के साथ मुझे समझ आया कि "वे लोग जो रुके रहे" किसी ब्रांड से जन्म नहीं लेती।

वह किसी कंपनी से जन्म नहीं लेती।

वह किसी परिवार से भी जन्म नहीं लेती।

वह एक सवाल से जन्म लेती है।

कोई जीवन अपनी पहचान खोए बिना युगों, देशों, संस्कृतियों और लोगों को कैसे पार कर सकता है?

मुझे जवाब नतीजों में नहीं मिला।

मुझे वह रिश्तों में मिला।

क्योंकि हर इंसान एक संवाद का परिणाम है।

कोई अकेला ख़ुद को नहीं गढ़ता।

कोई अकेला नहीं बढ़ता।

कोई अकेला ख़ुद को नहीं बचाता।

हर रास्ते के पीछे एक अदृश्य भीड़ मौजूद है।

और यहाँ पहुँचकर, मैं आख़िरकार उसे पहचानना चाहता हूँ।

मैं उन सभी लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने मेरी यात्रा में एक निशान छोड़ा है।

वे जो रुके रहे।

और वे जो रास्ते के बस एक हिस्से में साथ रहकर गुज़र गए।

वे जिन्होंने मुझे सिखाया।

और वे जिन्होंने मेरी परीक्षा ली।

वे जिन्होंने मुझसे प्यार किया।

और वे जिन्होंने मेरी बात काटी।

वे जिन्होंने मुझे अवसर दिए।

और वे जिन्होंने मुझे उन्हें ख़ुद गढ़ना सिखाया।

मैं अपने दादा को धन्यवाद देता हूँ।

अपने पिता को।

अपनी माँ को।

उस सबके लिए जो उन्होंने बिना समझाने की ज़रूरत के सौंप दिया।

मैं अपने परिवार को धन्यवाद देता हूँ।

मेरे साथ सिर्फ़ आसान दिन ही नहीं, बल्कि सबसे बढ़कर कठिन दिन बाँटने के लिए।

मैं उन स्त्रियों को धन्यवाद देता हूँ जो मेरे जीवन से होकर गुज़रीं।

कई बार उन्होंने मुझसे पहले देखा कि क्या हो रहा है।

कई बार उन्होंने मुझे एक ऐसा सच लौटाया जिसे मैं अकेले नहीं देख सकता था।

मैं रास्ते में मिले सहकर्मियों को धन्यवाद देता हूँ।

उन लोगों को जिनके लिए मैंने काम किया, और उन लोगों को जिन्होंने मेरे साथ काम किया।

क्योंकि उन सबने, अलग-अलग तरीक़ों से, मुझे कुछ सिखाया।

मैं उन देशों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मेरा स्वागत किया।

उन शहरों को जिन्होंने मेरी मेज़बानी की।

उन संस्कृतियों को जिन्होंने मुझे अलग-अलग नज़रिए दिखाए।

उन्होंने मुझे याद दिलाया कि दुनिया हमारी मान्यताओं से कहीं अधिक विशाल है।

मैं उन लोगों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मेरे साथ दुख झेला।

क्योंकि बाँटा हुआ दर्द ऐसे सबक़ सिखाता है जिन्हें सफलता नहीं जानती।

मैं उन्हें भी धन्यवाद देता हूँ जो चले गए हैं।

उनकी अनुपस्थितियों ने उस इंसान को, जो मैं बना, उतना ही गढ़ा जितना उपस्थितियों ने।

मैं परीक्षाओं को धन्यवाद देता हूँ।

ठोकरों को।

बीमारियों को।

असफलताओं को।

डरों को।

कठिन रातों को।

बिना जवाब के सवालों को।

क्योंकि हर बार जब कुछ टूटा, कुछ अधिक सच्चा उभरकर आया।

आज मैं अब यह नहीं मानता कि किसी जीवन को इससे नापा जाता है कि वह क्या जीतता है।

मैं मानता हूँ कि उसे इससे नापा जाता है कि वह क्या आगे सौंपता है।

इससे कि वह दूसरों में क्या छोड़ जाता है।

इससे कि वह क्या संभव बनाता है।

इससे कि क्या तब भी जीता रहता है जब उसका रचयिता मंच के केंद्र में नहीं रहता।

अगर मैं वह बना हूँ जो मैं हूँ, तो इसका श्रेय किसी एक फ़ैसले को नहीं जाता।

न किसी एक गुण को।

न किसी एक व्यक्ति को।

यह हज़ारों योगदानों का परिणाम है।

मुलाक़ातों का।

इशारों का।

शब्दों का।

उदाहरणों का।

उपस्थितियों का।

इस कृति पर मेरा नाम है।

पर यह सिर्फ़ मेरी नहीं है।

यह उन सबकी भी है जिन्होंने, जाने-अनजाने, रास्ते में एक छाप छोड़ी है।

शायद यही “वे लोग जो रुके रहे” का अंतिम अर्थ है।

कोई क़िस्सा नहीं, बल्कि एक पहचान।

यह पहचान कि हर इंसान एक सामूहिक रचना है।

रिश्तों का एक जोड़।

प्रभावों का एक भूगोल।

चलती हुई एक स्मृति।

और अगर इन पन्नों में तुम्हें ऐसा कुछ मिला है जो तुम्हारा अपना है, तो यह कहानी अब सिर्फ़ मेरी नहीं रही।

यह थोड़ी तुम्हारी भी हो गई है।

इसीलिए मैं विदाई के साथ समापन नहीं करता।

मैं कृतज्ञता के साथ समापन करता हूँ।

उन सबके लिए जिन्होंने मुझे वह बनने में मदद की जो मैं हूँ।

उन सबके लिए जो मेरे साथ-साथ चले।

और उन सबके लिए जो इस यात्रा को आगे जारी रखेंगे।